Chap-7

सप्तम अध्याय

उप - संहार

उपादेयता और महत्व

-:: -उ प सं हा र- :: -

आधुनिक युग के कुछ विशिष्ट कवियों में निराला स्मरणीय हैं। सबसे अधिक संख्या में निराला जी ने गीत लिखे हैं और उनमें छन्दों, रागों, कल्पना चित्रों तथा रसों का बड़ा वैविध्य है। इनके कुछ गीत तो विशुद्ध श्रृंगारिक हैं। "निराला के गीत वस्तुमुखी और चित्रात्मक हैं, इस विशेषता के कारण हिन्दी काव्य में निराला के गीत एक अप्रतिम स्थान रखते हैं। और उनकी समता की संतुलित गीत सृष्टि आधुनिक हिन्दी में अधिक नहीं है। इन गीतों में श्रृंगार, करुण और शान्त रसों की योजना है।"[1] इनके आरंभिक गीतों में श्रृंगार की प्रमुखता है।

निराला जी की रचनाओं में भाव पक्ष और कलापक्ष का अपूर्व सामंजस्य मिलता है। निराला जी के गीत सांगीतिक तत्व और काव्य तत्व से परिपूर्ण है। निराला जी ने अपनी कविताओं में चाहे श्रृंगार वर्णन किया हो या फिर भक्ति, वीर-भावना या प्रकृति वर्णन किया हो परन्तु उनमें भाव और भाषा का संतुलन बराबर मिलता है। निराला जी की विशेषता उनकी शब्द योजना भी है। वस्तु और शैली की दृष्टि से भी निराला ने अपने गीतों में कुछ अभिनव प्रयोग किए हैं। सौन्दर्य चित्रण की प्रवृत्ति निराला के अधिकतम गीतों में देखी जाती है।

नारी-सौन्दर्य, प्रणय भावना और प्रकृति के रमणीय चित्र बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किए गये हैं। अलंकारों में अनुप्रास और रूपक का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है। इनके आत्मपरक गीतों में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा निराला जी भाषा की दृष्टि से अधिक प्रयोगशाली रहे हैं उन्होंने भाषा के क्लिष्टतम और सरलतम दोनों ही रूपों पर समान अधिकार प्रदर्शित किया है। निराला की भाषा में पौरुषत्व का गर्जन स्वर है। निराला जी की भाषा के तीन प्रमुख स्तर हैं। सानुप्रासिक, सामासिक तथा कलात्मक भाषा। सहज, सरल तथा गंभीर किन्तु परिमार्जित भाषा और दैनिक व्यवहार की सरल मुहावरेदार भाषा। भाषा का यह वैविध्य अन्य छायावादी कवियों में नहीं है।

काव्य और संगीत का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है वस्तुत: काव्य समस्त कलाओं का सम्मिश्रण है किन्तु इसके साथ प्रत्यक्ष संबंध चित्र और संगीत का होता है। अन्य कलाओं का सम्बन्ध परोक्ष रूप में ही रहता है। काव्य के साथ चित्र और संगीत के सम्बन्ध पर डा० रामखेलावन पाण्डेय ने लिखा है - "काव्य चित्र और संगीत का समन्वित चित्रण है।"[2] काव्य के आधार के सम्बन्ध में डा० पाण्डेय ने लिखा है - "काव्य का आधार शब्द, अर्थ, चेतना और रचनात्मकता है। शब्द एक ओर जहाँ अर्थ की भाव भूमि पर पाठक को ले जाते हैं, वहाँ नाद के द्वारा श्राव्य मूर्त-विधान भी करते हैं। शब्द का महत्व उनके द्वारा प्रस्तुत मानसिक चित्र और ज्ञापित वस्तु के सामंजस्य में है।"[3] अत: इससे यह स्पष्ट है कि काव्य के लिये शब्द आवश्यक है किन्तु संगीत के लिये शब्द अनिवार्य

नहीं है बल्कि स्वर अनिवार्य हैं। संगीत का आधार स्वर माना जाता है जो मात्रा और ताल द्वारा नियंत्रित होता है। संगीत में शब्द का उतना महत्व नहीं होता है जितना कि नाद का अर्थात् वह अर्थ को महत्व नहीं देता, केवल नाद द्वारा प्रभाव उत्पन्न करता है। जिस तरह काव्य में संगीत तत्व आवश्यक है उसी तरह संगीत में काव्य-तत्व भी सहायक है। संगीत में काव्य तत्व का प्रश्रय अति प्राचीन काल से ही लिया जा रहा है। वैसे भी संगीत के प्रारम्भिकरूपों का काव्य से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध था। छन्द प्रयोग में, शब्द विन्यास में संगीत को काव्य तत्वों का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है इसलिए यदि संगीत में से काव्य तत्व निष्कासित कर दिया जाए तो संगीत मात्र आलाप-प्रलाप के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहेगा। यही कारण है कि संगीतज्ञ भी संगीत काव्य के महत्व को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार काव्य और संगीत दोनों में ऐसे अनेक तत्व विद्यमान हैं, जिनके कारण काव्य और संगीत दोनों में पारस्परिक सम्बन्ध बना हुआ है। इन दोनों में कल्पना, भावाभिव्यक्ति, संस्कृति, समाज, धर्म-भक्ति, आनंद प्राप्ति, सहृदयता, नाद, रस, छन्द, अलंकार, लय, भाषा आदि के समान तत्व मिलते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि काव्य और संगीत दानों का सम्बन्ध इस प्रकार से है जैसे शरीर और आत्मा का होता है दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

निराला जी ने अपने काव्य की रचना अन्तर्मन से की है इसलिये उनके काव्य में संगीतात्मकता स्वाभाविक रूप से ही मिलती है। निराला जी के काव्य की यही विशेषता है कि उन्होंने नाद, लय तथा भाव का इतना सुन्दर सामंजस्य किया है ऐसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। निराला जी का संगीत तो जन्मजात अलंकार है। उनकी पत्नी मनोहरा देवी की संगीत की बहुत रुचि थी। निराला जी जहां महिषादल में रहते थे वहां राज दरबार में बड़े बड़े गवैये आते थे। निराला जी उनके

पास जाकर अपने गाने का अभ्यास करते थे। इस प्रकार उन्होंने संगीत की साधना की तथा अपने गीतों की रचना, काव्य तथा संगीत दोनों को समान रूप से रखकर की है। निराला जी गीत सृष्टि के लिये काव्य एवं संगीत दोनों कलाओं का संयोग आवश्यक मानते हैं।

निराला-काव्य में संगीत तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जैसे - ताल, स्वर, सरगम, सप्तक, लय, तान, गत तथा मोड़। इन सब तत्वों को देखने से यह सिद्ध हो जाता है कि निराला जी को संगीत का गहन ज्ञान था। आपके काव्य में विभिन्न प्रकार के रागों, तालों तथा वाद्यों का भी उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त नृत्य की विभिन्न प्रकार की शैलियाँ जैसे कत्थक, कथकलि, मणिपुरी तथा लोक नृत्यों का भी उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार निराला जी ने भिन्न भिन्न विषयों पर गीतों की रचना की है। उसमें प्रकृति तथा शृंगारिक गीतों की प्रधानता है। कुछ गीतों में राष्ट्रीय भावना दिखाई देती है तो कहीं शोक भावना। भावों के आधार पर रसों की निष्पत्ति होती है। निराला जी के काव्य की यही विशेषता है कि इनके काव्य में सभी प्रकार के रस मिलते हैं। शृंगार, शान्त तथा करुण रस की प्रधानता है परन्तु यथावश्यक रौद्र, भयानक, वीभत्स आदि रसों का भी वर्णन निराला जी ने किया है।

कुकुरमुत्ता में हास्य एवं व्यंग्य देखने को मिलता है। हिन्दी-साहित्य में गीतिकाव्य की परंपरा विद्यापति से प्रारम्भ होती है। भक्ति-काल में गीति काव्य का पर्याप्त विकास हुआ है। रीतिकाल में गीति-काव्य का विकास अत्यल्प है। तत्पश्चात् आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से फिर गीति काव्य का विकास प्रारम्भ हुआ। छायावाद काल में इसका विकास अत्यधिक हुआ इसलिये इसे आधुनिक युग का स्वर्ण काल कहा जाता है। इसके पश्चात् प्रयोगवाद, प्रगतिवाद तथा नई कविता तक गीतिकाव्य की यह धारा सतत रूप से प्रवाहित होती रही और अभी भी यह नव गीति के रूप में विकासमान है।

छायावाद-युग में निराला जी ने गीतिकाव्य का बहुत विकास किया। इस काल के सभी प्रमुख कवि जैसे प्रसाद, पंत तथा महादेवी सभी सफल गीतकार हैं परन्तु निराला जी ने सबसे अधिक गीत लिखे। कारण यह था कि निराला जी का संगीत-शास्त्र का अध्ययन गहन था। "गीतिका" की भूमिका में काव्य और संगीत के सम्बन्ध में जो विचार निराला जी ने अभिव्यक्त किए हैं और जिन राग रागिनियों का परिचय प्रस्तुत करते हुए अपने गीतों से उदाहरण दिए हैं उन्हें देखने पर इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। निराला जी ने विभिन्न राग-रागिनियों में रचना की है। गीतों में ताल वही प्रयुक्त है जो सर्वाधिक लोक प्रचलित है। कवि ने स्पष्ट लिखा है - "जो संगीत कोमल, मधुर, और उच्च भाव, तदनुकूल भाषा और प्रकाशन से व्यक्त होता है, उसके साफल्य की मैंने कोशिश की है। ताल प्राय: सभी प्रचलित हैं। प्राचीन रंग रहने पर भी वे नवीन कण्ठ से नया रंग पैदा करेंगी।"[4] वस्तुत: निराला जी के गीत सभी राग-रागिनियों में गाये जा सकते हैं। "निराला को सुर और लय बहुत गहराई से आकर्षित करते रहे हैं। उनका संगीत उनके हृदय में बजता हुआ, बाहर आता हुआ मालूम पड़ता है। उनके गीतों को पढ़ते हुए बराबर यह लगता है कि उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सुर से सधा हुआ है। वे शब्द को, केवल अर्थ की पृष्ठभूमि में ही अपनी कविताओं में प्रयुक्त नहीं करते, बल्कि उनकी निगाह अर्थ से अधिक उसमें निहित सूक्ष्म लयात्मकता, ध्वनि संयोग तथा रंगमयता पर जाती है इसलिए निराला की कविताओं में प्रयुक्त शब्दों में उनका अर्थ उतना प्रमुख नहीं होता, जितना उसकी बजती हुई स्वर लहरियाँ और रंग वैविध्य। इसीलिए अक्सर शब्दों के स्वर और रंग उन्हें अधिक आकर्षित करते हैं।"[5]

निराला जी स्वयं संगीतज्ञ होने के कारण उन्होंने अपनी कविताओं को शास्त्रीय-संगीत में निबद्ध करके स्वयं गाया है। गीतिका की भूमिका

में उन्होंने स्वयं लिखा है - "कभी कभी मुक्त कंठ होकर और कभी हारमोनियम लेकर इनमें से कुछ कुछ गीत मैंने गाकर सुनाये हैं।"[6] इसी से यह स्पष्ट होता है कि निराला महान संगीत मर्मज्ञ कवि हैं। "संगीत को काव्य के और काव्य को संगीत के अधिक निकट लाने का श्रेय इन्हें ही प्राप्त है उनका काव्य संगीतमय है और संगीत काव्यमय। वास्तव में निराला जी में संगीत और काव्य का अपूर्व सामंजस्य है। उनका संगीत खोखला न होकर भाव से परिपूर्ण है। कविता पाठ की कला में उनके समक्ष कोई आधुनिक कवि नहीं ठहरता। वीणापाणि सरस्वती उनके कण्ठ में विराजती थी। जब निराला जी "जुही की कली" का गायन सुनाते थे तब एक सात्विक सौन्दर्य और श्रृंगार का ध्वनि चित्र आंखों के समक्ष घूमने लगता था। "बादल राग" या "राम की शक्ति पूजा" का गायन करते समय, ओजगुण, साक्षात मूर्तिमान हो उठता था। "विधवा" या "भिक्षुक" का गायन करते समय करुण-रस का प्रवाह होने लगता था। इस प्रकार कविवर निराला ने स्वयं अपने गीतों को गाकर अपने गीतों में संगीतात्मकता की सफलता घोषित की है। उनके गाने के ढंग में मौलिकता थी। इसी कारण तालबद्ध गीतों के समक्ष उनके प्रगीत कुछ विचित्र से लगने लगते हैं परन्तु कवि को सन्तोष है।"[7] आपने कहा है कि "चूंकि मैं बाजार का नहीं बन सका, शायद इसीलिए सरस्वती ने मेरे स्वरों को बाजारू नहीं बनने दिया।"[8] संगीत के विषय में निराला जी के विचार अविस्मरणीय हैं - "मैं खड़ी बोली में उच्चारण संगीत के भीतर जीवन की प्रतिष्ठा का स्वप्न देखता हूं - - - - जिन्हें खड़ी बोली का बहुत साधारण ज्ञान है वे मेरे गीत न गा सकेंगे। यह मैं जानता था और इस ज्ञान के आधार पर गीतों की स्वरलिपि मैं स्वयं करना चाहता था पर कुछ ऐसी परिस्थिति मेरी रही कि सब तरह से अभाव ही अभाव का सामना मुझे करना पड़ा। एक अच्छे हारमोनियम की गुंजाइश भी मेरे

लिये नहीं हुई। मेरी सरस्वती संगीत में भी मुक्त रहना चाहती है। [6]

निराला जी का काव्य भारतीय एवं पाश्चात्य - संगीत का सुन्दर सामंजस्य है। " निराला जी भारतीय संगीत और एक सीमा तक पश्चिमी संगीत के भी अभ्यासी रहे हैं। भारतीय - संगीत की केन्द्रीय विशेषता उसकी सामूहिक रसात्मकता है। उसमें वैयक्तिक भावना का योग अतिशय विरल रहता है। पश्चिमी संगीत में वैयक्तिक भावोन्मेष अवश्य पाया जाता है पर वहाँ भी संगीत, समाज की वस्तु माना गया है। जो संगीतकार सामाजिक चेतना के जितना ही समीप रहा है। उसने नवसंगीत निर्माण में उतनी ही सफलता प्राप्त की है। आज के पाउन राप्सन जैसे संगीतज्ञ इस बात का प्रमाण उपस्थित करते हैं। पश्चिमी संगीत में इस सामूहिक भाव चेतना के कारण पौरुषात्व की प्रधानता पायी जाती है। रुदन गीतों को अथवा वैयक्तिक अनुभूतियों को नये संगीत प्रवर्तन में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। निराला के गीत भी इसी सामूहिक गीत परम्परा के अनुयायी हैं इसीलिए कदाचित् निराला नये गीतों के स्त्रष्टा हैं जबकि अन्य कवि केवल गीतकार हैं। " [10]

निराला जी के गीत करुण तथा शान्त रस से मिलकर श्रृंगार की ऐसी सृष्टि करते हैं कि इनकी तुलना में हिन्दी की कोई आधुनिक गीत सृष्टि, नहीं ठहरती और इसे " निराला संगीत " के नाम से ही अभिहित करना सार्थक होगा। महाकवि जयशंकर प्रसाद निराला जी को कवि और संगीतज्ञ दोनों रूपों में श्रेष्ठ मानते हैं - " निराला जी हिन्दी कविता की नवीन धारा के कवि हैं और साथ ही भारती मन्दिर के गायक भी हैं। उनमें केवल पिक की पंचम पुकार ही नहीं, कनेरी की सी एक ही मीठी तान नहीं अपितु उनकी गीतिका में सब स्वरों का समारोह है। उनकी स्वर-साधना हृदय के ग्रामों को झंकृत कर सकती है कि नहीं, यह तो कवि

के स्वरों के साथ तन्मय होने पर ही जाना जा सकता है।"[11]

इस प्रकार निराला जी के सम्पूर्ण काव्य का अवलोकन करने के पश्चात हम देखते हैं कि निराला जी काव्य तथा भाव की दृष्टि से ही नहीं, संगीत की दृष्टि से भी श्रेष्ठ और सफल कवि हैं। उन्होंने भाव संगीत को प्रतिष्ठित् करने में अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। दूसरे शब्दों में उन्होंने जिस प्रकार काव्य को प्रवाहित किया है, उसी प्रकार से उन्होंने संगीत को भी परम्परागत गायन शैली से उन्मुक्त कर एक नयी भाव भूमि में प्रतिष्ठित करने का सचेष्ट प्रयत्न किया है।

निराला जी ने अपनी गीतिका की भूमिका के प्रारम्भ में जो बात वैदिक संगीत के बारे में कही है वह अपने आप में अत्याधिक महत्वपूर्ण है अत: उसे यहां उद्धृत करना अनुचित न होगा। "गीत सृष्टि शाश्वत है। समस्त शब्दों का मूल कारण ध्वनिमय ओंकार हैं। इसी अशब्द संगीत से स्वर सप्तकों की भी सृष्टि हुई। समस्त विश्व स्वर का ही पुंजीभूत रूप है, अलग अलग व्यष्टि में स्वर विशेष व्यक्त या मौन। स्वर संगीत स्वयं आनन्द है। आनन्द ही इसकी उत्पत्ति, स्थिति और परिसमाप्ति है। जहाँ आनन्द को लोकोत्तर कहकर विज्ञों ने निर्विषयत्व की व्यंजना की है - संसार से बाहर, ऊँचे रहने वाले किसी की ओर इंगित किया है - आनन्द को अभिन्न सत्ता प्रतिपादित की है, वहाँ संगीत का यथार्थ रूप अच्छी तरह समझ में आ जाता है। आर्यजाति का सामवेद संगीत के लिये प्रसिद्ध है। यों इस जाति ने वेदों में जो कुछ भी कहा, भावमय संगीत में कहा है। संगीत का ऐसा मुक्त रूप अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। गायत्री की महत्ता आज भी आर्यों में प्रतिष्ठित है। इसके नाम भी संगीत की सूचना है। भाव और भाषा की ऐसी पवित्र झंकार और भी कहीं है, मुझे नहीं मालूम। स्वर के साथ शब्द, भाव

और छन्द तीनों मुक्त हैं ।"[१२]

निराला जी के गीतों के बारे में भी आंशिक रूप से यह कहा जा सकता है कि स्वर के साथ शब्द, भाव और छन्द तीनों ही मुक्त हैं। वैसे देखा जाये तो साहित्य में संगीत अभेद रूप से विद्यमान रहता है। साहित्य की प्रत्येक सम पर संगीत थिरकता है। साहित्य के समस्त अंगों में संगीत की लय बहती होती है दोनों में पारस्परिक विरोध की स्थिति नहीं होती किन्तु साथ ही दोनों का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। जिसमें वे अपने अपने स्थान पर मोहक प्रतीत होते हैं लेकिन दोनों के समायोजन से गीत या साहित्य में भावनाएँ अपने चरमोत्कर्ष पर प्रभाव डालती हैं वैसे इसे आधुनिक युग की देन कहा जा सकता है इसके बाद भी हम निराला जी के गीतों को गीति वैशिष्ट्य से पूर्ण एवं सम्पन्न पाते हैं क्योंकि आपके गीतों में गीतिकाव्य को विकास का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है।

यह सत्य है कि गीत का अपना माधुर्य होता है। गीत की शब्द रचना को पढ़ने मात्र से ही श्रोताओं को आनन्द की प्राप्ति हो सकती है किन्तु संगीत की मधुर ध्वनि का सामिप्य पाकर जड़ प्रकृति भी जीवन्त हो उठती है उसका कण कण भी जब स्पन्दन से भर उठता है तब भला संगीत के सहयोग से गीत की पंक्तियाँ क्यों न खिल उठेंगी ? सम्पूर्ण गौरवपूर्ण गोसाईं-साहित्य यद्यपि हिन्दी साहित्य में सम्मानित दृष्टि से तो देखा जाता ही है किन्तु साथ ही उसकी संगीतात्मकता उसके दिव्य स्वरूप को और भी अधिक दिव्यता एवं मधुरता प्रदान करती है इसमें कोई दो मत नहीं है।

इसी प्रकार लोक - गीतों में किसी राग-विशेष का अस्तित्व न होते हुए, परम्परागत धुनों में ही गीतों को बांधकर गाया जाता है। इसके ठीक विपरीत शास्त्रीय-संगीत, शास्त्रीय परंपराएँ होती हैं ।

शास्त्रानुकूल गीतों को संगीत में बांधा जाता है । शास्त्रीय संगीत की गीति रचनाओं में ताल, स्वर, लय के साथ ही रागों का विशेष महत्व होता है । प्रत्येक गीत अलग अलग रागों में तथा अलग अलग तालों में निबद्ध किया जाता है तथा रागों को गीत की भावनाओं एवं उसके रसानुकूल निश्चित् किया जाता है । निराला जी के गीतों पर अंकित तालों के विविध प्रकार उनकी संगीत मर्मज्ञता के द्योतक हैं ।

किस गीत में उसकी भावनाओं के अनुरूप कौनसा राग पूर्ण रूप से सार्थक होगा, यह तो गीतकार पर ही निर्भर होता है । केवल मात्र किसी गीत रचना पर राग विशेष का नाम लिख दिये जाने से कोई राग अपने आप ही स्वत: उस गीत रचना से सम्बन्धित नहीं हो जाता । वास्तव में गीत की पंक्तियाँ ही संगीतकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करती हैं कि वह पहले छंदानुकूल तथा मात्रानुकूल अमुक ताल में बद्ध हो सकेगी तथा अपने रसानुकूल राग में ।

महान साहित्यकार होने के साथ साथ महान संगीतकार होना इस बात पर निर्भर करता है कि काव्य के मूलभूत तथ्यों या अंगों की पूर्ण जानकारी के साथ ही संगीत की समग्र विशेषताओं से वह पूर्णत: परिचित हो ।

निराला जी के काव्य में लय, स्वर तथा नाद का पूर्ण समायोजन है । लय, स्वर तथा नाद जिस प्रकार काव्य में सम्माननीय है । उसी प्रकार संगीत शास्त्र में भी तीनों का अपना एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है ।

प्रत्येक संगीत तत्व युक्त गीत रचना के लिये लय-बद्ध होना अत्यावश्यक है । संगीत-शास्त्र में लय का सीधा सम्बन्ध ताल से होता है अतएव लय-बद्धता से तात्पर्य है कि वह गीत रचना कौनसे ताल में गाई जा

रही है उस ताल में कितनी मात्राएँ हैं। गीत की शब्द रचना के अनुसार वे मात्राएँ पूर्णरूपेण शब्दों में विभाजित हो सकेंगी या नहीं इत्यादि प्रश्न किसी गीत रचना को संगीतबद्ध करने से पूर्व एक संगीत रचनाकार के सम्मुख आते हैं। लय के समान ही स्वरों का भी एक अपना विशिष्ट महत्व है। स्वरों का समायोजन भी किसी गीत रचना में निहित रस के माध्यम से ही होता है।

काव्य रचना में शुद्ध स्वरों की समायोजना यदि आनन्द की झन्कृतियों से मानव मन को आल्हादित करती है तो वहीं कोमल स्वर काव्य में विरह तथा करुण रस की उत्पत्ति में सहायक होते हैं। वीर रस में प्राय: दोनों प्रकार के स्वरों का सम्मिश्रण देखा जा सकता है।

' नाद ' को संगीत शास्त्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। संगीतशास्त्र में उसी नाद को स्वीकार किया गया है जो संगीतपयोगी हो तथा कर्णप्रियता एवं मधुरता लिये हुए हो। स्पष्ट है कि संगीत की महत्ता व उनकी जीवन शक्ति से स्वयं निराला जी चिर परिचित होंगे, इसी कारण अपने गीतों में उन्होंने संगीत के मधुर स्वरों का निर्झर प्रवाह बहा दिया है।

निराला जी के करुण और उल्लास के भावों में जहाँ साहित्य भी अपने आप को तिरोहित कर देता है वहीं संगीत के रागों की विविध स्वरलिपियाँ भी ऐसी प्रतीत होती है मानों वे भी उन पर पूर्णत: समर्पित हैं।

निराला जी के साहित्य में संगीत के सूक्ष्म तथा स्थूल दोनों ही तत्व समाहित हैं। जहाँ गीतिकाव्य में उनकी आत्मा के सामीप्य, अनुभूति की गम्भीरता, तीव्रता तथा व्यापकता का बोध संगीत के सूक्ष्म

तत्वों का मिश्रण उनके विशद सांगीतिक वैभव का द्योतक है। निराला जी ने कोमल भावनाओं के अनुसार संगीत के स्थूल तत्वों को सजाया है, संवारा है तथा स्वर, ताल तथा रागों के आरोह-अवरोह का उचित चयन कर अपने समग्र साहित्य में अपने संगीतज्ञ व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है।

निराला जी के संगीतात्मक काव्य में मार्मिक भावनाओं को तो पूर्ण सम्मान दिया गया है। संगीत कला में ऐसे भावों के अनुरूप ही स्वर रचनायें होती हैं जिसका ज्वलन्त उदाहरण है गीतिका।

निराला जी ने श्री राम की स्तुति-वन्दना, वीणा वादिनी सरस्वती देवी की आराधना तो की है साथ ही श्री राम के वरद हस्त के आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिये उन्होंने अन्य देवी देवताओं की भी वन्दना की है। वे सभी संगीतात्मक तत्वों से पूर्ण हैं।

संगीत की भावानुसार स्वर-संगति, भक्ति भावना को चरमोत्कर्ष प्रदान करती है। भक्त की दैन्यता और अपने ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण की भावना संगीत के शुद्ध स्वरों का सम्बल पाकर स्वाभाविक धरा पर आ जाती है। निराला जी की आराधना नामक रचना से ऐसा प्रतीत होता है, मानो संगीत की शक्तिमत्ता से प्रभावित होकर भक्त के करुण स्वर गान को सुनकर स्वयं ईश्वर भी अपने भक्त को आलिंगन में बांधने के लिये आतुर हो उठा है। आशय यह है कि निराला जी के अधिकांश पद संगीत के मधुर गुन्जन से युक्त हैं जिसकी स्वर झन्कृतियां हृदय को उल्लास से भर देती हैं।

मैंने अपने इस प्रस्तुत प्रबन्ध में संगीत के विभिन्न रागों के प्रयोग द्वारा यह तथ्य स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि निराला जी के पदों में संगीतात्मकता पूर्णरूपेण उपस्थित है। क्या ताल, क्या मात्रायें, क्या लालित्य व माधुर्य, राग रागिनियों का प्रयोग सभी दृष्टि से उनकी

पद रचनाएँ संगीत की कसौटी पर पूर्ण गेय सिद्ध होती हैं। यह आशय चालीस गीतों की स्वर रचनाओं से भी स्वतः सिद्ध हो जाता है।

वस्तुतः निराला कोई विशिष्ट संगीतकार ही नहीं थे जिन्होंने केवल सांगीतिक प्रस्तुतियों के लिये ही काव्य का सृजन किया हो, वरन् वे तो एक ऐसे महान साहित्यकार भी थे जिनके काव्य में सांगीतिकता एक विशिष्टता के रूप में संलग्न हुई है। यदि यह मान भी लिया जाये कि निराला ने संगीत की दृष्टि से विशिष्ट राग-रागिनियों को सामने रखकर अपने काव्य की सृष्टि की तो यह बात केवल उनके काव्य-संग्रह "गीतिका" में ही लागू हो सकती है। अन्यान्य रचनायें जिनमें गीतगुंज, सांध्य काकली, आराधना, अर्चना, परिमल, अनामिका तथा अणिमा जैसी कृतियों में हम सांगीतिक संभावनाओं को नकार नहीं सकते और यह कहा जा सकता है कि इन कृतियों में कवि का रागात्मक हृदय राग-रागिनियों से सम्बद्ध रहा होगा किन्तु तुलसीदास, कुकुरमुत्ता तथा राम की शक्ति पूजा जैसी विशिष्ट साहित्यिक रचनाओं में सांगीतिकता का बलात आरोपण नहीं किया जा सकता। कुछ कवितायें तो उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक परिवेश को लेकर लिखी थीं जिनमें संगीत के प्रति उनका कोई आग्रह नहीं था। 'तोड़ते-पत्थर' या 'भिक्षुक' जैसी कवितायें उनके संवेदनशील हृदय की उदार साहित्यिक अभिव्यक्तियां थीं ऐसे दायरों में संगीत के प्रति आग्रह की कोई संभावना वहाँ दृष्टिगत नहीं होती। अतएव यह कहा जा सकता है कि महाकवि निराला ने केवल "गीतिका" को ही विशिष्ट भूमिका के साथ प्रस्तुत किया है। अन्यत्र संगीत के प्रति उनका आग्रह इतना मुखर नहीं दिखाई देता।

जहां तक स्वाभाविक लय एवं काव्यगत रागात्मक प्रवृत्ति का प्रश्न है उनकी अतुकान्त कविताओं में भी उनकी संगीत सिद्धता की मानसिक प्रवृत्ति अधिकांशतः देखी जा सकती है। कवि की यह मनोवृत्ति संगीत के प्रति

आग्रह न होकर, संगीत के प्रति रुझान का परिचायक है। कवि निराला का व्यक्तित्व हमारे सामने एक विशिष्ट महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित होता है न कि संगीतकार के रूप में।

कवि स्वयं ही जब रचना करता है तो उसके सामने प्रतिपादित विषय और उसकी वर्णन प्रस्तुति भी प्रमुख रूप से विधमान रहती है न कि उसकी सांगीतिक निबद्धता।

कवि निराला ने सांगीतिक राग-रागिनियों की निश्चित स्वर मात्राओं को सामने रखकर अपनी कविताओं की सृष्टि नहीं की, बल्कि उनकी काव्य-कृतियों में संगीत का समन्वय कवि हृदय की रागात्मक प्रवृत्ति के स्वाभाविक स्पर्श के रूप में ही प्रस्तुत हुआ है। यदि कवि की अन्यान्य काव्य कृतियों को राग रागिनियों में बांधने का साग्रह प्रयत्न भी किया जाये तो यह सम्भव नहीं है। प्रस्तुत पंक्तियों की लेखिका ने जिन गीति रचनाओं की स्वर लिपियां तैयार की हैं, वे समस्त रचनायें कवि के मानस पटल पर इसी सांगीतिक रूप में विधमान रही होंगी। इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता किन्तु उनकी समग्र काव्य कृतियों को संगीत की समन्विति के दुराग्रह से बांधा भी नहीं जा सकता।

निराला जी का साहित्यकार रूप उनकी कृतियों में प्रमुखता से उभरा है और उनका संगीतकार रूप गौण रूप में प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने संगीत के लिये साहित्य की सृष्टि नहीं की थी बल्कि साहित्य के लिये संगीत का साहचर्य ग्रहण किया था। उनकी गीति रचनायें जहाँ एक ओर उनके सांगीतिक ज्ञान को स्पष्ट कराती हैं, वहीं दूसरी ओर उनके गीतकार के उद्दाम व्यक्तित्व को भी उभारने में सफल हुई हैं। यही कारण है कि आज निराला की कवितायें साहित्य की दृष्टि से जहाँ

अध्ययन और मनन की वस्तु हैं वहीं संगीत सम्मेलनों के मंच पर गाये जाने वाले गीतों के रूप में भी प्रस्तुत होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से निराला के उभय व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है तथा अनेक विधि यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि निराला एक संगीतज्ञ साहित्यकार थे। जिनकी काव्य रचनाओं में संगीत और साहित्य का समन्वय बड़े ही औचित्यपूर्ण ढंग से हुआ है। उन्होंने कहीं भी अपने सांगीतिक ज्ञान को प्रदर्शित करने का साहित्यिक प्रयास नहीं किया, बल्कि उनका साहित्य उनके हृदय की रागात्मक वृत्ति से जुड़कर स्वयं संगीत सिद्ध हो चुका था।

सन्दर्भ ग्रन्थ

			पृ०
१-	आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी :	कवि निराला :	५४
२-	डा० राम खेलावन पाण्डेय :	गीति काव्य :	३६
३-	वही		
४-	निराला:	गीतिका की भूमिका:	१२-१३
५-	दूधनाथ सिंह :	निराला: आत्महन्ता आस्था	६७-६८
६-	निराला:	गीतिका की भूमिका	
७-	डेजी वालिया :	निराला की संगीत साधना :	६६
८-	निराला :	गीतिका की भूमिका	
९-	वही :		
१०-	रमेशचन्द्र मेहरा :	निराला का परवर्ती काव्य :	१९३-१९४
११-	निराला :	गीतिका की भूमिका :	
१२-	निराला :	गीतिका की भूमिका:	७

--